पाठ 16. घमंड का फल

पाठ का परिचय

कच्छ के रेतीले रेगिस्तान में चारों ओर केवल छोटी-छोटी कँटीली झाड़ियाँ ही थीं। कोई बड़ा पेड़ नज़र नहीं आता था। हरे-भरे जंगलों से आने वाली हवाएँ हमेशा उन्हें चिढ़ातीं। कुछ वर्षों बाद वर्षा के दिनों में बरगद का एक नन्हा-सा बीज बहता हुआ आया। पहले वह पौधा बना और देखते-ही-देखते बरगद का एक बड़ा पेड़ बन गया। राहगीर उसकी छाया में आराम करने लगे और पक्षी उसमें घोंसले बनाकर रहने लगे। अपनी अहमियत देख बरगद को घमंड आ गया। वह अपने आसपास की झाड़ियों को हीन भावना से देखने लगा। हवाओं के संगीत पर उसने झूमना छोड़ दिया। एक दिन शाम को तेज़ आँधी आई। नन्ही झाड़ियाँ तो ज़मीन पर लेटकर बच गईं लेकिन अकड़कर खड़ा बरगद का पेड़ उखड़कर दूर जा गिरा।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

घमंडी व्यक्ति का सिर कभी-न-कभी अवश्य नीचा होता है। घमंड करने वाले व्यक्ति का कोई साथ नहीं देता। अत: हमेशा नम्र बनकर जीवन जीना चाहिए।

पाठ का वाचन

कक्षा में शुद्ध उच्चारणसहित कहानी का वाचन करें। कठिन शब्दों के अर्थ बताते हुए पंक्तियों का भाव स्पष्ट करते जाएँ। बच्चों से बीच-बीच में यह जानने के लिए प्रश्न करें कि उन्हें पाठ समझ में आया या नहीं। बच्चों से भी वाचन करवाएँ। उच्चारण की शुद्धता पर ध्यान दें।

महत्वपूर्ण चर्चा

घमंड किसे कहते हैं, इसपर कक्षा में चर्चा करें। किस-किस प्रकार से लोग घमंड करते हैं, यह भी बच्चों को बताएँ। निम्नलिखित प्रश्न कर उनसे कक्षा में चर्चा करें –

- तुम किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हो जो घमंडी हो?
- तुम्हें वह व्यक्ति कैसा लगता है?
- तुममें से कौन-कौन घमंड करना अच्छा समझता है या कौन-कौन घमंडी है?
- घमंडी व्यक्ति को क्या सज़ा देना चाहोगे?

इस बात का ध्यान रखें कि कक्षा के किसी बच्चे पर सीधे आक्षेप लगाकर उसे घमंडी बताने का साहस कोई न करे। इससे बच्चे के आत्मसम्मान को ठेस पहुँच सकती है।